उवसामगाणुवसमिओ भावो, खवगाणं खइओ भावो त्ति उत्तं होदि।

जहाक्खादविहारसुध्दिसंजदेसु चदुटठाणी ओघं ॥५३॥

सुगममेदं।

संजदासंजदा ओघं१ (xxx संयतासंयतानां xx सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ॥५४॥

एदं पि सुगमं।

असंजदेसु मिच्छादिटि्ठ जाव असंजदसम्मादिटिठ त्ति ओघं२ (x x x असंयतानां च सामान्यवत् । स.सि.१,८.) ॥५५॥

सुगममेदं, पुव्व परुविदत्तदो।

एवं सजमग्गणा समत्ता।

दंसणाणुवेदण चक्खुदंसणि-अचक्खुदंसणीदु मिच्छादिटि्ठप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं३ (दर्शनानुवादेन चक्षुदर्शनाचक्षुर्दर्शनावधिदर्शनिनां सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ॥५६॥

उपशामकोंके औपशमिक भाव और क्षपकोंके क्षायिक भाव होता है, यह अर्थ सूत्रद्वारा कहा गया है। यथाख्यातविहारशुध्दिसंयतोंमें उपशान्तकषाय आदि चारों गुणस्थावर्ती भाव ओघके समान हैं ॥५३॥

यह सूत्र सुगम है।

संयतासंयत भाव ओघके समान है ॥५४॥

यह सूत्र भी सुगम है।

असंयतोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥५५॥

यह सूत्र सुगम है, क्योंकि, पहले प्ररुपण किया जा चुका है। इस प्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई।

दर्शनमार्गणाके अनुवादसे चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतराछद्मस्थ गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥५६॥

कुदो? मिच्छादिट्ठिप्पहुडि खीणकसायपज्जंतसव्वगुणट्ठाणाणं चक्खु-अचक्खुदंसणविरहियाणमणुवलंभा।

ओहिदंसणी ओहिणाणिभंगो ll५७ll

केवलदंसणी केवलणाणिभंगो ll५८ll

एदाणि दो वि सुत्ताणि सुगमाणि l

एवं दंसणमग्गणा समत्ता l

लेस्साणुवादेण किण्हलेस्सिय-णीललेस्सिय-काउलेस्सिएसु चदुटठाणी ओघं१ (लेश्यानुवादेन षड्लेश्यानामलेश्यानां च सामान्यवत् l स.सि.१,८.) ll५९ll

चदुण्हं ठाणाणं समाहारो चदुटठाणी l केण समाहारो? एगलेस्सए l सेसं सुगमं l

तेउलेस्सिय-पम्मलेस्सिएसु मिच्छादिटिठप्पहुडि जाव अप्पमत्तसंजदा त्ति ओघं ll६०ll

एदं पि सुगम२ (ता.१ प्रतौ एदं सुगमं इति पाठः l) l

क्योंकि, मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषाय पर्यत कोई गुणस्थान चक्षुदर्शन और अचक्षुदर्शनवाले जीवोंसे रहित नहीं पाया जाता है l अवधिदर्शनी जीवोंके भाव अवधिज्ञानियोंके भावोंके समान हैं ll५७ll

केवलदर्शनी जीवोंके भाव केवलज्ञानियोंके भावोंके समान हैं ll५८ll

ये दोनां ही सूत्र सुगम हैं l

इस प्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई l

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्यवालोंमें आदिके चार गुणस्थानवर्ती भाव ओघकेसमान हैं ll५९ll

चार स्थानोंके समाहारको चतु:स्थानी कहते हैं l

शंका- चारों गुणस्थानोंका समाहार किस अपेक्षासे है ?

समाधान- एक लेश्याकी अपेक्षासे है, अर्थात् आदिके चारों गुणस्थानोंमें एकसी लेश्या पाई जाती है l

शेष सूत्रार्थ सुगम है l

तेजालेश्या और पदमलेश्या वालोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ll६०ll

यह सूत्र भी सुगम हैं l

सुक्कलेस्सिएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥६१॥

सुगममेदं ।

एवं लेस्समग्गणा समत्ता ।

भवियाणुवादेण भवसिध्दिएसु मिच्छादिटिठप्पहुडि जाव आजोगिकेवलि त्ति ओघं१ (भव्यानुवादेन भव्यांना मिथ्यादृष्टद्ययोगकेवल्यन्तानां सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ॥६२॥

कुदो? एत्थतणगुणट्ठाणाणं ओघगुणट्ठाणेहिंतो भवियत्तं पडि भेदाभावा ।

अभवसिध्दिय त्ति को भावो, पारिणामिओ भावो२ (अभव्यानां पारिणामिको भाव: ।स.सि.१,८.) ॥६३॥

कुदो? कम्माणमुदएण उवसमेण खएण अखओवसेण वा अभवियत्ताणुप्पत्तीदो । भवियत्तस्स वि पारिणामिओ चेय भावो, कम्माणमुदय-उवसम-खय-खओवसमेहि भवियत्ताणुप्पत्तीदो । गुणटठाणस्स भावभणिय मग्गणटठाणभावं परुवेंतस्स कोभिप्पओ?

शुक्ललेश्यावालोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥६१॥

यह सूत्र सुगम है?

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई ।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिध्दिकोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥६२॥

क्योंकि, भव्यमार्गणावसम्बन्धी गुणस्थानोंका ओघ गुणस्थानोंसे भव्यत्व नामक पारिणामिकभावके प्रति कोई भेद नहीं हैं ।

अभव्यसिध्दिक यह कौनसा भाव है? पारिणामिक भाव है ॥६३॥

क्योंकि, कर्मोंके उदयसे, उपशमसे, क्षयसे, अथवा क्षयोपशमसे अथव्यत्व भाव उत्पन्न नहीं होता है । इसी प्रकार भव्यत्व भी पारिणामिक भाव ही है, क्योंकि, कर्मोंके उदय, उपशम, क्षय और क्षयोपशमसे भव्यत्व भाव उत्पन्न नहीं होता ।

शंका- यहांपर गुणस्थानके भावको न कह कर मार्गणास्थानसम्बन्धी भावका प्ररुपण करते हुए आचार्य का क्या अभिप्राय है?

गुणटठाणभावो अउत्तो वि जाणिज्जदि१ (ता.१ प्रतौ णाण्णिज्जदि मु प्रतौ णाणिज्जओ इति पाठः ।)। अभवियत्तं पुण उवदेसमवेक्खदे, पुव्वमपरुविदसरुवत्तादो । तेण मग्गणाभावो उत्तो त्ति ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

समत्ताणुवादेण सम्मादिटिठसु असंजदमसम्मादिटिठप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं ॥६४॥

सुगममेदं ।

खइयसम्मादिटिठसु असंजदसम्मादिट्ठी त्ति को भावो, खइओ भावो२ (सम्यक्तवानुवादेन क्षायिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टिः क्षायिक भावः । स.सि.१,८.) ॥६५॥

कुदो? दंसणमोहणीयस्स णिम्मूल्क्खएणुप्पसम्मात्तादो ।

खइयं सम्मतं३ (क्षायिकंसम्यक्त्वम् ।स.सि.१,८.) ॥६६॥

खइयसम्मादिट्ठीसु सम्मतं खइयं चेव होदि त्ति अणुत्तसिध्ददो णेदं सुत्त-माढवेदव्वं? ण एस दोसो । कुदो? ण ताव खइयसम्मादिट्ठी सण्णा खइयस्स सम्मत्तस्स

समाधान- गुणस्थानसम्बन्धी भाव तो विना कहे भी जाना जाता है । किन्तु अभव्यत्व (कौनसा भाव है यह) एपदेशकी अपेक्षा रखता है, क्योंकि, उसके स्वरुपका पहले प्ररुपण नहीं किया गया है, इसलिए यहांपर (गुणस्थानका भाव न कह कर) मार्गणासम्बन्धी भाव कहा है ।

इस प्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टिसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव ओघके समान हैं ॥६४॥

यह सूत्र सुगम है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है? क्षायिक भाव है ॥६५॥

उत्क जीवोंकेक्षायिक सम्यक्त्व होता है ॥६६॥

क्योंकि, दर्शनमोहनीयकर्मकेनिर्मूल क्षयसे क्षायिकसम्यक्त्व उत्पन्न होता है ।

शंका- क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंमें सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है, यह बात अनुत्कसिध्द है, इसलिए इस सूत्रका आरम्भ नहीं करना चाहिए?

समाधान- यह कोई दोष नहीं, क्योंकि, क्षायिकसम्यग्दृष्टि यह संज्ञा क्षायिक-

----

अत्थित्तं गमयदि, तवण-भक्खरादिणामस्स अणणुअटठस्सं१ (ता. १ प्रतौ अणाणुअटठस्स अति पाठः ।) वि उवलंभा । ण च अण्णं किंचि खइयसम्मत्तस्स अत्थित्तम्हि चिण्हमत्थि । तदो खइयसम्मादिटिठस्स खइयं चेव सम्मत्तं होदि त्ति जाणाविदं । अवरं च ण सव्वे सिस्सा उप्पण्णा चेव, किंतु अउप्पणा वि अत्थि । तेहि खइयसम्मादिटिठणं किमुवसमसम्मत्तं किं खइयसम्मतं, किं वेदगसम्मतं होदि त्ति पुच्छिदे एदस्स सुत्तस्स अवयारो जादो, खइयसम्मादिटिठणं खइयं चेव सम्मतं होदि, ण सेसदोसममत्ताणि त्ति जाणावणट्ठी अपुव्वकरणक्खवयाणं खइयभावाणं खइयचरित्तस्सेव दंसणमोहखवयाणं पि खइयभावाणं तस्संबंधेण वेदयसम्मत्तोदए संते वि खइयसम्मत्तस्स अत्थित्तप्पसंगे तप्पडिसेहटठं वा ।

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो२ (असंयतत्वमौदयिकेन भावेन ।स.सि.१,८.) ।।६७।।

सुगममेदं ।

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो३ (संयतासंयतप्रमत्ताप्रमत्तसंयतानां क्षायोपशमिको भाव: । स.सि.१,८.) ।।६८।।

सम्यक्त्वके अस्तित्का ज्ञान नहीं कराती है । इसी कारण यह है कि लोकमें तपन, भास्कर अदि अनन्वर्थ (अर्थशून्य या रुढ) नाम भी पाये जाते हैं । इसके अतिरिक्त अन्य कोई चिह्न क्षायिकसम्यक्त्वके अस्तित्वका है नहीं । इसलिए की गई है । क्षायिकसम्यग्दृष्टिके क्षायिक सम्यक्त्व ही होता है, यह बात इस सूत्रसे ज्ञापित की गई है । दूसरी बात यह भी है कि सभी शिष्य व्युत्पन्न नहीं होते, किन्तु कुछ अव्युत्पन्न भी होते हैं । उनकेद्वारा क्षायिक-सम्यग्दृष्टियोंके क्या उपशमसम्यक्त्व है, किंवा क्षायिकसम्यक्त्व है, किंवा वेदकसम्यक्त्च होता है, ऐसा पूछने पर क्षायिकसम्यग्दृष्टियोंके क्षायिक ही सम्यक्त्व होता है, शेष दो सम्यक्त्व नहीं होते हैं, इस बातके जतलानेके लिए, अथवा क्षायिकभाववाले अपूर्णकरण गुणस्थानवर्ती क्षपकोंके क्षायिक चारित्रके समान क्षायिकभाववाले भी जीवोंके दर्शनमोहनीयका क्षपण करते हुए उसके सम्बन्धसे वेदकस्यक्त्वप्रकृतिके उदय रहने पर भी क्षायिकसम्यक्त्वके , अस्तिवका प्रसंग प्राप्त होनेपर उसका प्रतिषेध करने के लिए सूत्रका अवतार हुआ है ।

किन्तु क्षायिकसम्यग्दृष्टिका असंयतत्व औदयिक भावसे है ।।६७।।

यह सूत्र सुगम है ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत यह कौनसा भाव है?

क्षायोपशमिक भाव है ll६८ll

कुदो? चारित्तावरणकम्मोदए संते वि जीवसहावचारित्तेगदेसस्स संजमासंजमपमत्त-अप्पमत्तसंजमस्स आविब्भावस्सुलंभा l

खइयं सम्मत्तं१ (क्षायिकं सम्यक्त्वम् l स.सि.१,८.) ll६९ll

सुगममेदं l

चदुण्हमुवसमा त्ति को भावो, ओवसमिओ भावो२ (चतुर्णामुपशमकानामौपशमिको भाव: lस.सि.१,८.) ll७०ll

मोहणीयस्सुवसमेणुप्पण्णचरित्तत्तादो, मोहोवसमणहेदुचारित्तसमण्णिदत्तादो य l

खइयं सम्मतं३ (क्षायिकं सम्यक्त्वम् l स.सि.१,८.ता.२ प्रतौ खइयसम्मत्तं इति पाठ: l) ll७१ll

पारध्ददंसणमोहणीयक्खवणो कदकरणिज्जो वा उवसमसेढिं ण चढदि त्ति जाणावणटठमेदं सुत्तं भणिदं l सेसं सुगमं l

चदुण्हं खवा सजोगिकेवली अजोगिकेवलि त्ति को भावो, खइओ भावो४ (शेषाणां सामान्यवत् lस.सि.१,८.) ll७२ll

क्योंकि, चारित्रावरणकर्मके उदय होने पर भी जीवके स्वभावभूत चारित्रके एक देशरुप संयमासंयम, प्रमत्तसंयम और अप्रमत्तसंयमका (उत्क जीवोंके क्रमश:) आविर्भाव पाया जाता है l

उक्त जीवोंके सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ll६९ll

यह सूत्र सुगम है l

अपूर्वकरण आदि चार गुणस्थानोंके क्षायिकसम्यग्दृष्टि उपशामक यह कौनसा भाव है? औपशमिक भाव है ll७०ll

क्योंकि, उपशान्तकषायके मोहनीयकर्मके उपशमसे उत्पन्न हुआ चारित्र पाया जानेसे और शेष तीन उपशामकोंके मोहोपशमके कारणभूत चारित्रसे समन्वित होनेसे औपशमिकभाव पाया जाता है l

क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों उपशामकोंके सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ll७१ll

दर्शनमोहनीयकर्मके क्षपणका प्रारम्भ करनेवाला जीव, अथवा कृतकत्यवेदक सम्यदृष्टि जीव, उपशमश्रेणीवर नहीं चढता है, अस बातका ज्ञान करानेके लिए यह सूत्र कहा गया है l

शेष सूत्रार्थ सुगम है l

क्षायिकसम्यग्दृष्टि चारों गुणस्थानोंके क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली यह कौनसा भाव है? क्षायिक भाव है ll७२ll

----

कुदो? मोहणीयस्स खवणहेदुअपुव्वसण्णिद चारित्तसमण्णिदत्तादो मोहक्खएणुप्पण्णचारित्तादो घादिक्खएणुप्पण्णणव केवललध्दीहिंतो l

खइयं सम्मत्तं ll७३ll

सुगममेदं l

वेदयसम्मादिट्ठीसु असंलदसम्मादिटिठ त्ति को भावो? खओवसमिओ भावो१ (क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टे: क्षायोपशमिको भाव: lस.सि.१,८.) ll७४ll

सुगममेदं l

खओवसमियं सम्मत्तं२ (क्षायोपशमिकं सम्यक्त्वम् l स.सि.१,८.) ll७५ll

ओघम्मि असंजदसम्मादिट्ठिस्स तिण्णि भावा सामण्णेण परुविदो, एदं सम्मत्तमोवमियं खइयं खओवसमियं वेत्ति ण परुविदं l संपहि सम्मत्तमग्गणाए एदं सम्मत्तमोवसमियं खइयं खओवसमियं वेत्ति एदेहि सुत्तेहि जाणाविंद l सेसं सुगमं l

----

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो१ (असंयत: पुनरौदयिकेन भावेन lस.सि.१,८.) ll७६ll

अवगयत्थमेदं l

संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा२ (ता.२ प्रतौ पमत्तपमत्त अप्पापमत्तसंजदा इति पाठ: l) त्ति को भावो? खओवसमिओ भावो३ (संयतासंयतप्रमत्ताप्रमत्तसंयतानां क्षायोपशमिको भाव: lस.सि.१,८.) ll७७ll

णादटठमेयं l

खओवसमियं सम्मत्तं४ (क्षायोपशमिकंसम्यक्त्वम् l स.सि.१,८.) ll७८ll

कुदो? दंसणमोहोदए संते वि जीवगुणीभूदसद्यहणस्स उपपत्तीए उवलंभा l

उवसमसम्मादिटिठसु असंजदसम्मादिटिठ त्ति को भावो l उवसमिओ भावो५ (औपशमिकसम्यग्दृष्टिषु असंयतसम्यग्दृष्टेरौपशमिको भाव: lस.सि.१,८.) ll७९ll

कुदो? दसंणमोहुवसमेणुप्पण्णसम्मत्तादो l

उवसमियं सम्मत्तं६ (औपशमिकं सम्यक्त्वम् ।स.सि.१,८.ता.१मु प्रत्यो: उवसमियं सम्मत्तं इति पाठ: ।) ॥८०॥

किन्तु वेदकसम्यग्दृष्टिका असंयतत्व औदयिक भावसे है ॥७६॥

इस सूत्रका अर्थ ज्ञात है ।

उत्क जीवोंके सम्यग्दर्शन क्षायोपशमिक होता है ॥७८॥

क्योंकि, दर्शनमोहनीयके (अंगभूत सम्यक्त्वप्रकृतिके) उदय रहने पर भी जीवके गुणस्वरुप श्रध्दाकी उत्पत्ती पाई जाती है ।

उपशमसम्यग्दृष्टियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टि यह कौनसा भाव है? औपशमिक भाव है ॥७९॥

क्योंकि, उपशमसम्यग्दृष्टियोंका सम्यक्त्व दर्शमोहनीयकर्मके उपशमसे उत्पन्न हुआ है ।

उक्त जीवोंके सम्यग्दर्शन औपशमिक होता है ॥८०॥

ओदइएण भावेण पुणो असंजदो१ (असंयत: पुनरौयिकेन भावेन । स.सि.१,८.) ॥८१॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि । संजदासंजद-पमत्त-अप्पमत्तसंजदा त्ति को भावो, खओवसमिओ भावो२ (संयतासंयतप्रमत्ताप्रमत्तसंयतानां क्षायोपशमिको भाव: ।स.सि.१,८.) ॥८२॥

सुगममेदं ।

उवसमियं सम्मत्तं३ (औपशमिकं सम्यक्त्वम् । स.सि.१,८.) ॥८३॥

एदं पि सुगमं ।

चदुण्हमुवसमा त्ति को भावो, उवसमिओ भावो४ (चतुर्णामुपशमकानामौपशमिको भाव: । स.सि.१,८.) ॥८४॥

उवसमियं सम्मत्तं५ (औपशमिकं सम्यक्त्वम् । स.सि.१,८.) ॥८५॥

दो वि सुत्ताणि सुगमाणि ।

सासाणसम्मादिट्ठी ओघं६ (सासादनसम्यग्दृष्टे: पारिणमिको भाव: । स.सि.१,८.) ॥८६॥

किन्तु उपशमसम्यक्त्वी असंययतसम्यग्दृष्टि जीवका असंयतत्व औदयिक भावसे है ॥८१॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं ।

उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत यह कौनसा भाव है? क्षायोपशमिक भाव है ॥८२॥

यह सूत्र सुगम है।

उक्त जीवोंके सम्यग्दर्शन औपशमिक होता है ॥८३॥

यह सूत्र भी सुगम है।

अपूर्वकरण आदि चार गुणस्थानोंके उपशमसम्यग्दृष्टि उपशामक यह कौनसा भाव है? औपशमिक भाव है ॥८४॥

उत्क जीवोंके सम्यग्दर्शन औपशमिक होता है ॥८५॥

ये दोनों ही सूत्र सुगम हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि भाव ओघके समान है ॥८६॥

सम्मामिच्छादिट्ठी ओघं१ (सम्यग्मिथ्यादृष्टे: क्षायोपशमिको भाव: ।स.सि.१,८.) ॥८७॥

मिच्छादिट्ठि ओघं२ (मिथ्यादृष्टेरौदयिको भाव: ।स.सि.१,८.) ॥८८॥

तिण्णि विसुत्ताणि अवगयत्थाणि।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

सण्णियाणुवादेण सण्णीसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसायवीदरागछदुमत्था त्ति ओघं३ (संज्ञानुवादेन संज्ञिनां सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ॥८९॥

सुगममेदं।

असण्णि त्ति को भावो, ओदइओ भावो४ (असंज्ञिनामौदयिको भाव: । स.सि.१,८.) ॥९०॥

कुदो? णोइंदियावरणस्स सव्वघादिफद्दयाणमुदएण असण्णित्तुप्पत्तीदो । असण्णिगुणट्ठाभावो किण्ण परुविदो? ण, उवदेसमंतरेण तदवगमादो५ (तदुभयव्यपदेशरहितानां सामान्यवत् ।स.सि.१,८.)।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि भाव ओघके समान है ॥८७॥

मिथ्यादृष्टि भाव ओघके समान है ॥८८॥

इन तीनों ही सूत्रोंका अर्थ ज्ञात है।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

संज्ञिमार्गणाके अनुवादसे संज्ञियोंमें मिथ्यादृष्टिसे लेकर क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ तक भाव ओघके समान हैं ॥८९॥

यह सूत्र सुगम है।

असंज्ञी यह कौनसा भाव है? औदयिक भाव है ॥९०॥

क्योंकि, नोइन्द्रियावरणकर्मके सर्वघाती स्पर्धकोंके उदयसे असंज्ञित्व भाव उत्पन्न होता है।

शंका- यहांपर असंज्ञी जीवोंके गुणस्थानसम्बन्धी भावको क्यों नहीं बतलाया?

समाधान- नहीं, क्योंकि, उपदेशके विना ही उसका ज्ञान हो जाता है।

इस प्रकार संज्ञीमार्गणा समाप्त हुई।

आहाराणुवादेण आहारएसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघं१ (आहारानुवादेन आहारकाणां xx सामान्यवत् ।स.सि.१,८.) ॥९१॥

सुगममेदं।

अणाहाराणं कम्मइयभंगो२ (xx अनाहारकाणां च सामान्यवत् । स.सि.१,८.) ॥९२॥

एदं पि सुगमं। कम्मइयादो विसेसपदुप्पायणटठं उत्तरसुत्तं भणदि-

णवरि विसेसो, अजोगिकेवलि त्ति को भावो, खइओ भावो ॥९३॥

सुगममेदं।

(एवं आहरामग्गणा समत्ता।)

एवं भावाणुगमो त्ति समत्तमणिओगद्दारं३ (भाव: परिसमाप्त: ।स.सि.१,८.)।

आहारमार्गणाके अनुवादसे आहारकोंमे मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगिकेवली तक भाव ओघके समान हैं ॥९१॥

यह सूत्र सुगम है।

अनाहरक जीवोंके भाव कार्मणकाययोगियोंके समान हैं ॥९२॥

यह सूत्र सुगम है।

कार्मणकाययोगियोंमें विशेषता प्रतिपादन करनेके लिए उत्तर सूत्र कहते हैं -

किन्तु विशेषता यह है कि अनाहारक अयोगिकेवली यह कौनसा भाव है? क्षायिक भाव है ॥९३॥

यह सूत्र सुगम है ।

(इस प्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई ।)

इस प्रकार भावानुगमनामक अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।